हिन्दुस्तान • नई दिल्ली • शनिवार • 15 अक्तूबर 2016 • 12

अंधेरे से डरना क्यों

अंधेरा... बस यही एक शब्द है किसी को डराने के लिए। हम इसके बारे में सोचकर सहम जाते हैं। हम अंधेरे से क्यों डरते हैं? क्योंकि हम सच्चाई से डरते हैं। अंधेरा क्या है? कुछ भी नहीं। यह पूरा ब्रह्मांड 'कुछ नहीं' से शुरू हुआ और कुछ भी नहीं है इसका अंत। इसलिए हम डरते हैं अंधेरे से। हम बुराई को अंधेरा मानते हैं। हम ऐसे जीना चाहते हैं, जैसे अंधेरा है ही नहीं। इसलिए रोशनी का नामकरण हुआ। इस विशाल रात को उजागर करने की कोशिश की। हमने मान लिया अंधेरा हार गया। खत्म कर दिया। लेकिन रोशनी अंधेरे का विलोम कभी नहीं बन पाएगी। हम रोशनी को एक जगह से शुरू करते हैं। यह कुछ दूर जाकर खत्म भी हो जाती है। अंधेरा कहां से शुरू और कहां खत्म होता है? इसने पूरे ब्रह्मांड को अपने में लपेटकर रखा है। अंधेरा हमें रोशनी से अधिक चीजें दिखाता है, कुछ न दिखाकर।

अंधेरा हमें रोशनी से कहीं अधिक चीजें दिखाता है, कुछ नहीं दिखाकर भी।

दुनिया को भगवान ने बनाया- यह एक आलस भरा जवाब है। 'कुछ नहीं' से सब कुछ आया है। जब हम 'कुछ नहीं' के बारे में सोचते हैं, तो हमारे दिमाग में बस काला रंग तैरता है। अंधेरा क्यों? रात को जरा निहारिए। कितने प्यारे टिमटिमाते तारे दिखते हैं? ये तारे, जिनको अंधेरा जला रहा है। तारों की रोशनी सीमित है। क्या अंधेरा अपने अंधकार को बना रहा है? नहीं। अंधेरा बस होता है। मेरा तो मानना है कि अगर कुछ सुपर-नैचुअल है, तो वह बस अंधेरा है। इतना सारा, सब कुछ होने के बाद भी अंधेरा कुछ नहीं है। अंधेरे में जीवन है।

जानकी पुल में अमृत रंजन